साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 44, सितम्बर(प्रथम) , 2018

अब बस.....

बसंती पंवार

आज शारदा की ऑखों में न नींद थी न सपनें । आज से पहले तो वह जागती ऑखों से भी सपने देख–देख मुस्कराती । आज उसकी पूरी दुनिया ही बदल गई । वह चाहती थी ; ऑसुओं को समझाना कि व्यर्थ बहने से कोई फायदा नहीं हैं । मगर ऑसू तो इतने भावुक , इतने भोले कि समझना ही नहीं चाहते थे । चुंधियाई ऑखों से गिरते झिलमिलाते मोतियों में बीता हुआ एक–एक पल कभी मुस्काता कभी खिल्ली उड़ाता । वो देख रही थी उन दिनों को , जिनकी याद दर्द के सिवाय कुछ नहीं दे सकती थी । फिर भी उसने देखा–

उस दिन वह और अनिल कितने खुश थे । कितने संघर्षों के बाद उनके बचपन के प्यार को जीत हासिल हुई । जाति बंधन तोड़ना इतना आसान नहीं था । उस पर शारदा के माता–पिता रूढ़िवादी विचार धारा वाले ।

दो विजातीय बच्चे एक मोहल्ले में एक साथ खेलते , पढ़ते , लड़ते–झगड़ते बड़े हुए । समझ ही नहीं पाए कि कब हमेंसा के लिए एक दूजे का होने की ठान बैठे ।

परिवारों को मनाना कोई आसान काम नहीं था । कई परीक्षाओं से गुजरते गए, पास होते गए । अब अंतिम परीक्षा थी – अनिल की नौकरी । शारदा के पिता ने स्पष्ट कह दिया कि अगर अनिल की सरकारी नौकरी नहीं लगी तो यह शादी हरगिज नहीं हो सकती । अब सरकारी नौकरी कोई जेब में रखी वस्तु तो नहीं थी कि निकाली और ले ली । पॉच वर्षों के लम्बे संघर्ष के बाद आखिर अनिल बैंक में नौकरी पाने में कामयाब हो गया । अब कोई अड़चन नहीं सब ठीक । दोनों परिवारों की रजामंदी से ; मंगनी धूमधाम से हो गई । छः माह बाद शादी की तारीख भी तय कर दी गई । कितनें सपनें , कितनी खुशियां , कितनें खुशनशीब । एक दिन न जाने शारदा को क्या सूझा , उसने अनिल को फोन किया –

''हलो ; अनिल । ''

''कौन ? आप कौन बोल रही हैं ? ''

''मैं .....मैं ....सविता । ''

''कौन सविता ? ''

''अब कौन की बात छोड़ौ , हमसे रिश्ता जोड़ौ । ''

''क्या बकवास है ? ''

''बकवास नहीं , हम आपको बहुत चाहते हैं । ''

अनिल ने झुंझलाकर फोन काट दिया । शारदा खिलखिला उठी । बाद में अनिल ने उसे बताया कि किसी सविता का फोन आया और उसने कैसी – कैसी बकवास की ।

इस तरह शारदा ;सविता बन अनिल से मोबाइल पर बातें करने लगी । कुछ दिनों बाद उसे लगा कि अनिल भी सविता से बात करने में रूचि लेने लगा है । एक दिन शारदा ने अनिल को फोन पर कहा –

''अनिलजी ! मैं आपकी शारदा से कहीं अधिक सुन्दर हूं । और जानते हो , मैं अमीर बाप की इकलौती पुत्री हूं । ''

''अच्छा है , पर मुझे क्यों बता रही हो ? ''

''क्योंकि मैं आपसे प्यार करती हूं । ''

'' मैं आपको कितनी बार बताउं कि मेरी मंगनी हो चुकी है । ''

''अरे ! मंगनी ही तो हुई है , शादी तो नहीं ना और अगर शादी भी हो चुकी हो तो प्यार करने वालों को क्या फर्क पड़ता है । ''

इस तरह की बातों से अनिल को परेशान कर, शारदा खुश होती रही । पर धीरे–धीरे उसे महसूस होने लगा कि अनिल अब शारदा की बातों में दिलचस्पी नहीं लेता , सविता से बातों में उसका मन लगने लगा है ।

धीरे–धीरे उसने सविता से हुई बातें बताना भी कम कर दिया । पूछने पर टालने की कोशिश करता । साथ ही काम के बहाने उसने शारदा से मिलना भी कम कर दिया । सविता से बातों में प्रेम की महक, शारदा ने महसूस की । धीरे–धीरे अनिल का फोन आना भी कम हो गया ।

एक दिन अनिल ने फोन पर उसे बताया कि उसका ट्रांसफर हो गया है । इस पर शारदा ने कहा–

''जल्दी आना , शादी की तारीख नजदीक आ रही है , फिर मेरा मन.....। ''

''शादी ! तुम तो जानती ही हो कि अभी–अभी नौकरी लगी है , चार पैसे कमा लूं , शादी का क्या है होती रहेगी । ''

''ये.....ये....तुम कह रहे हो ? कितनी जल्दी थी तुम्हे शादी की , कितने संघर्षों से गुजर कर हमने घर वालों को मनाया, अब तुम.....तुम ...ये कह रहे हो ?'' कहते–कहते शारदा रो पड़ी ।

''अरे यार ! तुम मेरी मजबूरी नहीं समझ रही हो । '' और फोन कट गया ।

फिर अनिल का फोन सविता के पास आया । शारदा ने संयत होकर , सविता बन उसी अंदाज में बात की । अनिल ने जो कुछ कहा उसे सुनकर वो आवाक् रह गई, उसने कहा–

''सुनो सविता ! मैने अपना ट्रांसफर करवा लिया है और शारदा को भी अभी शादी के लिए टाल दिया है । क्या करूं न जाने तुममे ऐसा क्या है ? तुम्हारी आवाज से समझ सकता हूं कि तुम बहुत सुंदर हो । तुम भी इकलौती और मैं भी इकलौता । मेरे जैसा दामाद पाकर तुम्हारे माता–पिता धन्य हो जाएंगे । मेरा अनदेखा प्यार भी जीत जाएगा । तुम कुछ बोल नहीं रही हो, क्या बात है ? अच्छा अब तो मिलने की जगह बता दो

, अपना प्यारा सा मुखड़ा दिखला दो , जिस पर बिना देखे ही मर मिटा हूं और अपने बचपन के प्यार को भी भूल बैठा हूं । बताओ ना कि कहां आउं ?''

फोन पर सविता बनी शारदा कुछ नहीं बोल पाई । उसने फोन बंद कर दिया । अब उसके पांव तले जमीन ही कहां थी । वह धड़ाम से बैठ गई । जार–जार रोने लगी । फोन कर अपनी सहेली को बुलाया , जिसका मोबाइल वो सविता बनने के लिए इस्तेमाल करती थी । आने पर रोते–रोते उसने सारी बात उसे बताई । कहा–

''मैने ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी, नीलू ! मुझे ऐसा खेल नहीं खेलना चाहिए था । ''

''मजाक में ही सही , उसकी असलियत तो सामने आई ना । उसके कमजोर मन और आत्मविश्वास की कमी का तो पता चला ना । अगर शादी के बाद वो तुझसे अधिक रूपवान और पैसे वाली को देखकर तुझे धोखा देता , तलाक देता तो तू क्या करती ? क्या तेरी जिन्दगी बरबाद .....। ''

''पर.....पर.....क्या नीलू ! पैसा और रूप ही सबकुछ होता है ? सच्चे प्यार का कोई मोल नहीं ? फिर मुझमें क्या कमी है ? और जिसे देखा ही नहीं उससे प्यार.....!''

''ये प्यार नहीं, उसका स्वार्थ है । ''

''और....और....हमारा वौ बचपन का प्यार.....वौ .....वौ.....कुछ नहीं उसके लिए ? में क्या करूं नीलू ?'' कहते–कहते वौ फूट–फूट कर रो पड़ी ।

''एक बात मानोगी ?''

''हां , बोल । ''

''तुझे उसे ठुकराना होगा । ''

''क्या.....?''

''हां । ''

''नहीं.....नहीं.....मैने उससे सच्चा प्यार किया है , मैं उसे कैसे.....। ''

''तो फिर क्या करेगी ? जबरदस्ती उसके साथ ब्याह रचाएगी ? उसके साथ खुश रह पाएगी ?''

शारदा कुछ सोचने लगी ।फिर बोली–

''तू ठीक कहती है । अब मै अगर उसे अपना भी लूं तो , मैं उसके साथ खुश नहीं रह पाऊंगी । उसका धोखा मुझे ताउम्र कचोटता रहेगा । ''

''हां शारदा ! संभाल अपने आपको । जिन्दगी कोरी भावनाओं के सहारे नहीं चलती । उसके लिए ठोस धरातल चाहिए । बात कुछ समय की नहीं है , पूरे जीवन भर साथ निभाने की है । ये घाव तो भर जाएंगे । लेकिन जिन्दगी भर का घाव.....। हकीकत का सामना कर । जो भी करना ,सोच समझ कर करना । ऐसा

ना हो कि बाद में पछताना पड़े । अच्छा अब मैं चलती हूं फिर आऊंगी । '' नीलू के जाने के बाद वह घंटों रोती रही ।

और दूसरे दिन.....दूसरे दिन नीलू ने बताया–

''अनिल का फोन बार–बार आ रहा है , पर में उठा नहीं रही हूं । ''

''हां , यही ठीक रहेगा । उठाओ तो कह देना–शारदा और सविता दोनों मर गई । ''

और उधर.....परेशान अनिल....., फोन से पता लगाता हुआ नीलू के घर जा पहुंचा । दरवाजा नीलू ने ही खोला ।

''तो आप....आप.....सविता हैं ?''

''आप कौन ?''

''मैं.....मैं.....अनिल.....और आप सविता ही है ना ?''

''जी , नहीं । ''

''तो उनसे मिलवाइये ना, मुझे उनसे जरूरी काम है । ''

नीलू की इच्छा हुई कि धक्के मार कर उसे निकाल दे । उसने अनिल की फोटो ही देखी थी । शारदा ने भी अनिल को अपनी इस सखी के बारे में नहीं बताया था और आज अचानक अपनी सखी के गुनहगार को देखकर वो सोच में पड़ गई । फिर उसने उसे अन्दर बुलाया और सारी बातें विस्तार से बताई

सुनकर अनिल के चेहरे पर हवाईयां उड़ने लगी । शरीर पसीने से लथपथ हो गया । लगभग दो कीलोमीटर की दूरी पर ही शारदा का घर था । वह हिम्मत कर सीधा शारदा के घर पहुंचा । उससे माफी मांग गिड़गिड़ाने लगा, मगर शारदा ने अपने आप को पत्थर बना लिया । बोली–

''बस अनिल जी ! अब बस.....अब कुछ नहीं , चले जाइए यहां से बचपन का प्यार, रूप और पैसों की चकाचौंध में कहीं खो चुका है । ''

उसने दरवाजा बंद कर लिया । गुनगुनाने की कोशिश करने लगी–'कसमें वादे प्यार वफा सब..... ''अपनी भावनाओं को दबाने का दर्द छलकने लगा । सोचने लगी–सबके नशीब में सच्चे प्यार की दौलत नहीं होती ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें